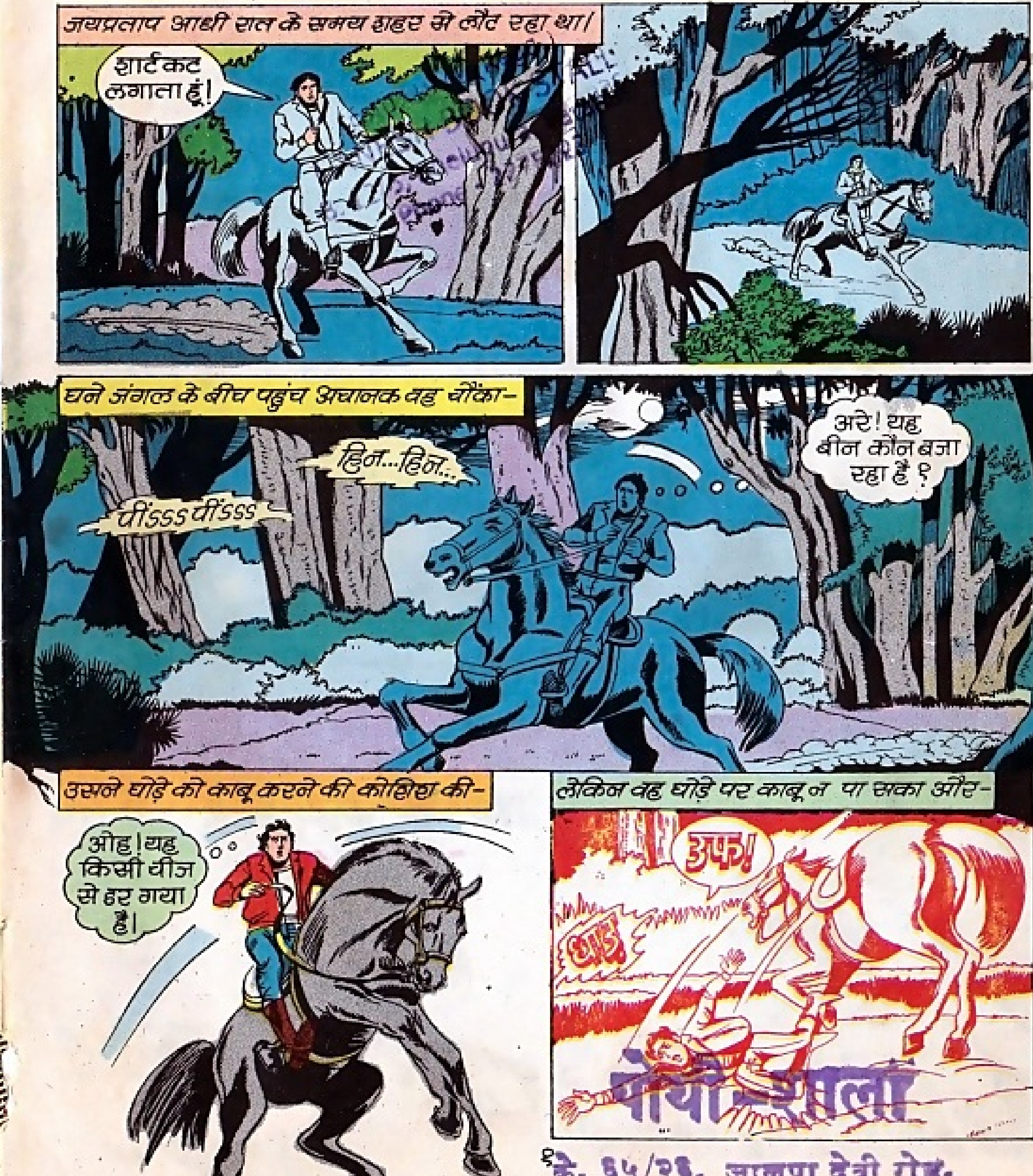

मनोज
कॉमिक्स
संख्या 997 मूल्य 7.00
नागिन की आत्मा
थ्रिल.एक्शन.एडवेंचर
ADAM STUDIO


मनोज कॉमिक्स का आगामी सैट
इच्छाधारी हवलदार और
पंगानाथ
इच्छाधारी हवलदार
और पंगानाथ
लालकिला गायब
(इन्द)
लुटेरे अंग
(जटायु)
हत्यारा कंकाल
(कमाण्डो)
जहरीला सपेरा
(भूत-प्रेत, तन्त्र-मंत्र)
शेरबाज और नागनाथ
नये सैट के कॉमिक्स
दिव्यशक्ति का बेटा (राम-रहीम)
टोटान का कहर (टोटान)
त्रिकालदेव और रक्तासुर (त्रिकालदेव)
कुकबाण्ड और खरबूजा (कुकबाण्ड)
नागिन की आत्मा (थ्रिल-एक्शन-एडवैंचर)
मुर्दे (भूत-प्रेत, तन्त्र-मंत्र)
प्रकाशक : मनोज पॉकेट बुक्स, 1584 दरीबा कलां, दिल्ली-110 006
वितरक : राजा सेल्स कारपोरेशन, 761 मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110 009
© कॉपीराइट सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

नागिन की आत्मा

लेखक : अनसार अख्तर. चित्रांकन : दिलीप कदम, तुषार लष्करे.




पींऽऽऽ पींऽऽऽ
बीन की यह आवाज उन झाड़ियों के दूसरी तरफ से आ रही है।
अगले पल –
ओह!
पींऽऽऽ पींऽऽऽ
तभी सामने की झाड़ियों से एक भयानक फुंकार के साथ नागकन्या प्रगट हुई।
फिस्स
हे भगवान!
नागकन्या उस सपेरे के सामने पहुंच नाच करने लगी–
उफ! क्या मैं सपना देख रहा हूं?


धीरे-धीरे नागकन्या का नृत्य तेजी पकड़ता गया।
फिस्स
फिस्स
फिस्स
पीsss पीsss
कुछ देर बाद—
बस! शांत हो जा!
फिस्स
ले, अपना शिकार संभाल!
अगले ही पल वह अपने शिकार पर झपट पड़ी—
फिस्स
दांतों के द्वारा वह बला उस युवती का खून चूस रही थी।
और जब वह खून चूसकर हटी—
मोम की तरह पिघलता चला गया उस युवती का शरीर—


उफ़!
अगले पल भय के कारण जयप्रताप के मुख से चीख निकल पड़ी।
ई...ई...ई...!
चीख सुन कालिया सपेरा बुरी तरह गर्ज उठा।
पकड़ो उसे!
उसके शरीर से लिपटे सांप फौरन हरकत में आये।
फिस्स
फिस्स
अपनी तरफ बढ़ती मौत को देख जयप्रताप जान छोड़कर भागा।
वे मुझे मार डालेंगे!
लेकिन सांपों ने उसका पीछा न छोड़ा।
बचाओऽऽऽ


कुछ दूर जाने पर–
आहा! मेरा घोड़ा।
अब मैं बच जाऊंगा।
अगले पल–
कुछ दूर जाने पर जयप्रताप ने शांति की सांस खींची।
आहा! अब सांप दिखाई नहीं दे रहे।
लेकिन जब उसने सामने देखा, भय के मारे उसकी चीख निकल गई–
ई...ई...ई...!
और अगले पल घोड़े के सिर के स्थान पर उस कालिये सपेरे का सिर प्रगट होते देख वह पुनः बुरी तरह चीख उठा।
हा...हा...हा...!
ई...ई...ई...!
अचानक घोड़ा अगली दोनों टांगें उठाकर बुरी तरह हिनहिनाया और –
धाड़
आई...ई ई...!
हा...हा... हा...!


अगले पल पीछे आते सांपों ने उसे घेर लिया।
फिस्स
फिस्स
फिस्स
उफ!
तभी नागकन्या भी वहां आ पहुंची और—
फिस्स
नहीं। तू अपना शिकार कर चुकी है...
...यह तेरे लिए नहीं है।
फिस्स
म...मुझे जाने दो।
तूने हमें देख लिया है, इसलिए हम तुझे जिन्दा नहीं छोड़ सकते।
फिर उसने सापों को आदेश दिया
खत्म कर दो इसे।
नहीं sss
फिस्स
ई...ई...ई...!
फिस्स
अब तू वापस चली जा।
कुछ ही क्षण में जयप्रताप के प्राण निकल गये थे।


दस दिन बाद—
मीना, तुम यहीं रुको, मैं जाकर पता करता हूं।
पुलिस चौकी माधोपुर
अगले पल वह इंस्पेक्टर संदीप के सामने था
मेरा नाम विजय प्रताप है इंस्पेक्टर साहब। जय प्रताप मेरा छोटा भाई था।
और आप उसकी मौत के दस दिन बाद आये हैं!
दरअसल, हम घर पर नहीं थे। कल लौटे तो जय की मृत्यु का समाचार मिला और हम तुरन्त यहां चले आए!
ओ के.! आपके भाई को जंगल में सांपों ने काट लिया था, जिससे उनकी मौत हो गई। हमने उनका अंतिम संस्कार कर दिया है।
हम जय के घर आना चाहते हैं। मेरी पत्नी भी साथ आई है।
जरूर आइए! यह लीजिए चाबी। आपका भाई गांव के निकास पर एकांत में बने एक मकान में रहता था। मैं आपको पता बता देता हूं!
कुछ देर बाद—
जय इस गांव में आकर क्यों बस गया था विजय?
वह चित्रकार था, अकेला रहना पसंद करता था, इसलिए शहर छोड़कर यहां आ बसा था!
यही है जय का घर!
यहां तो ताला लगा है!


इंस्पेक्टर ने मुझे जय के घर की चाबी दे दी थी।
मकान का मुख्य द्वार खोलकर ड्राइंगरूम में प्रविष्ट हुए वे दोनों—
मकान तो अच्छा है।
हां, मगर मेरा भाई इसमें नहीं है। अंतिम समय में मैं उससे मिल भी नहीं सका।
फिर वे बेडरूम में पहुंचे।
अरे! यह तो कोई हवेली लगती है।
शुक्र है कोई तो पड़ोस में रहता है। मैं तो समझ रहा था, यहां अकेला रहना होगा।
क्या तुम यहां रहने के इरादे से आए हो?
जय का सामान समेटने में और यह मकान बेचने में कुछ दिन तो लगेंगे ही और ये दिन यहीं काटने होंगे।
शाम को—
मैं शहर जाकर खाने-पीने का सामान ले आता हूं। तुम आराम करो।
जल्दी आना।


मगर विजय को शहर से लौटने में देर हो गई।
कोई सवारी नहीं मिली। इतना लम्बा रास्ता पैदल ही तय करना होगा!
जंगल से होकर निकलता हूं। यह छोटा रास्ता होगा!
कुछ दूर जाने के बाद-
यह तो काफी घना जंगल है। गलती की इधर आकर
और जल्दी ही वह रास्ता भटक गया।
उफ! लगता है मैं जंगल में भटक गया हूं।
अचानक वह बीन की आवाज सुनकर चौंका।
पींऽऽऽ पींऽऽऽ
ओह! कोई बीन बजा रहा है!
आवाज इधर से आ रही है। जरूर कोई सपेरा है। उससे रास्ता पता करूंगा!
पीं ऽऽऽ पीं ऽऽऽ


तभी अचानक पेड़ पर से कोई उस पर कूदा।
धप्प
उफ!
नहीं छोड़ूंगा!
गों...गों...
विजय ने पूरी जी-जान से अपने को छुड़ाने की कोशिश करते हुए उसे कमर पर लादकर आगे की ओर उछाल दिया।
धप्प
आह!
यह साला शायद चोर है!
अगले पल –
ठाक
उफ!
साले! धोखे से हमला करता है!
जान से मार दूंगा!
नहीं! मत मारो!
तब बता, मुझ पर हमला क्यों किया था?
मैं तुम्हें बचाना चाहता था। तुम बीन का स्वर सुनकर मौत की तरफ जा रहे थे, इसलिए मैंने तुम्हें रोका था।


क्या बक रहे हो?
मैं सच कह रहा हूं। कुछ दिन पहले जय नामक एक युवक उसी बीन वाले का शिकार बन चुका है। मैंने अपनी आंखों से जय को मरते देखा था।
जय तो मेरा भाई था। क्या उसकी हत्या हुई है?
हां। उसकी हत्या हुई है। मैंने अपनी आंखों से उसकी हत्या होते देखी थी। हा..हा..हा...मैंने उसे अपनी आंखों से मरते देखा था। हा..हा..हा...।
लगते तो तुम पागल हो, लेकिन जय की मौत के बारे में जरूर कुछ जानते हो। मेरे साथ चलो।
नहीं।
तुम्हें चलना होगा। ऐसे नहीं तो बेहोश होकर।
ठाक
आह!
उसे बेहोश करने के बाद—
घर ले जाकर इससे पूरी बात पता करूंगा।



फिर काफी देर तक जंगल में भटकने के बाद वह वापस मकान पर पहुंचा।
अरे! यह किसे उठा लाये!
विजय ने उसे संक्षेप में सारी स्थिति समझा दी और बोला —
यह जय की मौत का राज़ जानता है।
जल्दी ही उसे होश आ गया।
आह! मैं कहां हूं?
तुम इस समय जयप्रताप के घर में हो।
नहींsss
अरे, ठहरो।
पागल चीखता हुआ उठकर भाग खड़ा हुआ था।
ऐ! रुक जाओ।
हा... हा...हा...!
आई...ई...ई...!


आsss
उसे चोट लगी है!
मैं जाकर देखता हूं!
जल्दी ही —
सुनो, तुम ठीक हो न?
ड... डॉक्टर!
डॉक्टर! कहां है डॉक्टर?
वहां! डॉक्टर फ्रेंक!
इतना कहकर पागल बेहोश हो गया।
मीना, यह तो बेहोश ही गया है। उस हवेली में शायद कोई डॉक्टर रहता है। मैं उसे बुलाता हूं!
जल्दी जाओ!
थोड़ी देर बाद विजय उस हवेली के फाटक पर था।
यहां तो बिल्कुल सन्नाटा है!
फाटक खोलकर वह हवेली के प्रवेश द्वार पर पहुंचा और दरवाज़े में लटकी जंज़ीर को बजाने लगा।
खट खट खट


दरवाजा काफी देर बाद खुला और गर्म हवा का एक झोंका उसके शरीर से टकराया।
उफ! क्या भीतर आग दहक रही है!
फिर दरवाजे पर एक अधेड़ व्यक्ति प्रगट हुआ।
कौन हो तुम?
ज...जी मैं आपका पडोसी हूं! एक आदमी घायल हो गया है। प्लीज, आप मेरे साथ चलिए। आप डॉक्टर फ्रेंक ही हैं ना?
हां, मैं फ्रेंक हूं लेकिन मैं दवाइयों वाला डॉक्टर नहीं हूं।
तभी सफेद लिबास पहने एक सुन्दर-सी लड़की दरवाजे पर प्रगट हुई।
कौन आया है पापा?
कोई नहीं। तुम अपने कमरे में जाओ ऐनी!
आप मेरे साथ चलकर उस आदमी को बचाने में मेरी मदद कीजिए डॉक्टर! वह मेरे भाई जय की मौत का राज जानता है। आपको उसे बचाना ही होगा!
ओह! तुम जयप्रताप के भाई हो!
ठीक है। आप दो मिनट रुकिए, मैं तैयार होकर आता हूं!
प्लीज! जल्दी आइएगा।


उधर मीना अभी भी खिड़की में खड़ी थी। अचानक वह नीचे उगी झाड़ियों में से उभरती भयंकर फुफकार को सुनकर चौंकी।
यह कैसी आवाज है?
फिस्स
अगले पल झाड़ियों में नागकन्या प्रगट हुई।
ई...ई...ई...!
फिस्स
चीख सुनकर नागकन्या ने मीना की ओर देखा। अगले पल उसकी आंखों से तेज प्रकाश की धारा-सी निकलकर मीना की ओर बढ़ी।
उफ्फ!
उस प्रकाश की धारा के प्रभाव से मीना बेहोश होकर नीचे गिर पड़ी।
धाड़
इधर नागकन्या फुफकारती हुई बेहोश पड़े पागल व्यक्ति की ओर बढ़ी।
फिस्स
फिस्स
अचानक नागकन्या बेहोश हुए पागल व्यक्ति से थोड़ी दूरी पर रुकी और...
...उसकी जीभ लम्बी होकर पागल की गर्दन तक जा पहुंची—


अगले पल उसकी जीभ पागल की गर्दन में जा घुसी—
खच्च
उधर—
कहां है वह आदमी ?
उधर खिड़की के नीचे पड़ा है।
लेकिन खिड़की के नीचे पहुंचते ही विजय चौंका।
अरे!
ड... डॉक्टर... यह क्या हो रहा है ?
मुझे क्या पता!
पागल का मोम की तरह पिघलता शरीर जल्दी ही कंकाल में बदल गया।
यह असंभव है। मैं इसे जीवित छोड़कर गया था।
तो अब तुम्हारा क्या इरादा है ?


पुलिस को सूचना देनी होगी डॉक्टर। यह बहुत रहस्यमय मामला लगता है।
पुलिस चौकी तो इस समय नहीं जाया जा सकता। सुबह सूचना देंगे। अब तुम घर में जाकर आराम करो।
घर! अरे हां। मीना कहां गई? वह खिड़की पर खड़ी थी।
जल्दी ही वह मुख्य द्वार से भीतर पहुंचा और मीना को बेहोश देख बुरी तरह चौंक उठा।
मीना! अरे! क्या हुआ मीना को
मीना की देखभाल करने में वह कुछ देर के लिए सब कुछ भूल गया।
ओह! क्या हो गया मीना को?
काफी देर के बाद मीना ने आंखें खोलीं।
तुम...तुम ठीक तो हो ना डार्लिंग?
आऽऽऽ मुझे नींद आ रही है।


हां! मुझे सोने दो! बड़े जोर की नींद आ रही है मुझे!
सो जाओ!
मीना के सोते ही उसने खिड़की से झांका और बुरी तरह चौंक उठा।
अरे!
वह फौरन दौड़ता हुआ उस जगह पहुंचा।
कहां चला गया कंकाल?
शायद उसे डॉक्टर फ्रेंक उठा कर ले गया है! चल-कर पता करता हूं!
जल्दी ही वह हवेली के द्वार पर जा पहुंचा। दस्तक देने पर जब थोड़ी देर बाद दरवाजा खुला—
ओह! फिर वही हवा का झोंका!
कौन हो तुम?
मैं विजय हूं डॉक्टर, वह कंकाल कहां है?


कंकाल! क्या तुम पागल हो मिस्टर? कोई अजनबी मुझसे मज़ाक करे, यह मुझे पसंद नहीं।
यह क्या कह रहे हो डॉ॰ फ्रेंक! मैं आपसे कुछ देर पहले ही तो मिला था। आप मेरे साथ मेरे मकान तक भी गए थे। और वह कंकाल?
शटअप! मैं तुमसे कभी नहीं मिला और न ही कोई कंकाल देखा। जाओ यहां से।
डॉक्टर!
अगले पल डॉक्टर ने दरवाजा बंद कर लिया।
धाड़
ओह!
डॉक्टर झूठ क्यों बोल रहा है? क्या राज है इसमें?
वह खिड़की खुली है। इस रास्ते से चलकर देखता हूं, डॉक्टर क्या कर रहा है?


और वह जल्दी ही खिड़की के रास्ते अंदर दाखिल हो गया।
उफ। कितना अंधेरा है और गर्मी भी!
अंधेरे में टटोल-टटोलकर वह कमरे के दरवाज़े पर पहुंचा और दरवाजा खोला।
वह कॉरीडोर में बने एक अन्य दरवाजे की ओर बढ़ा।
किसी किस्म की कोई आहट अथवा आवाज़ नहीं है यहां।
उस कमरे का दरवाजा खोलते ही–
उफ! कैसी बदबू है!
चीं sss
चीं sss
भीतर एक अजीब दृश्य था।
हे भगवान!
चीं sss चीं sss
चीं sss चीं sss
कुछ क्षण में उसकी आंखें अंधेरे में पूरी तरह देखने योग्य हुईं तो वह कमरे में बने एक अन्य द्वार से ऐनी को प्रवेश करते देख चौंका–
ओह! यह तो ऐनी है। डॉक्टर फ्रेंक की बेटी।


ऐनी ने शायद उसे नहीं देखा था। वह सीधी खरगोशों के पिंजरे की ओर गई और एक खरगोश निकाला...
...और उसकी गर्दन पर दांत गड़ा दिये।
अगले पल वह खरगोश को दांतों से नोच-नोच कर खा रही थी।
जल्दी ही विजय की सहनशक्ति जवाब दे गई और वह बुरी तरह चीख उठा —
ई...ई...ई...!
अगले ही पल ऐनी का शरीर नागकन्या के रूप में परिवर्तित होने लगा...
...और फिर उसकी भयंकर जीभ विजय की ओर बढ़ी।
उफ्फ!
फिस्स्स


वह डरकर पूरी शक्ति से चिल्लाया।
नहीं!
तभी-
धाड़
क्या हो रहा है?
तुम यहां कैसे आ गये मूर्ख?
ठाक
आह!
पहले से ही बुरी तरह भयभीत विजय घूंसा खाकर बेहोश हो गया था।
और जब उसे होश आया।
अरे! मैं यहां कैसे पहुंचा?
उसने मीना को जगाया और उसे रात की सारी घटनाएं सुनाईं। जवाब में मीना ने भी उसे नागकन्या के विषय में बताया। फिर सारी बात सुनकर वह एक निर्णय पर पहुंचते हुए बोला-
मुझे लगता है, डॉक्टर फ्रेंक और उसकी बेटी इन्सान नहीं हैं!
हमें पुलिस के पास जाना चाहिए!
पुलिस चौकी जाकर उन्होंने इंस्पेक्टर से दाप की सारी घटनाएं सुनाईं।
बड़ी विचित्र कहानी सुनाई है आप दोनों ने। और क्योंकि डॉक्टर फ्रेंक इस क्षेत्र में रहस्य-मय व्यक्ति समझा जाता है, मैं इस मामले की अपने ढंग से तफ्तीश करूंगा
थैंक्यू सर!


उसी रात इंस्पेक्टर संदीप चोरों की तरह डॉक्टर फ्रेंक की हवेली में प्रविष्ट हुआ।
उफ! विजय ठीक कह रहा था, यहां अजीब तरह की तेज गर्मी है!
अगले पल वह उस दरवाजे से दूसरे कमरे में झांक रहा था।
यह डॉक्टर फ्रेंक हो सकता है।
ओह! तलवार उतार रहा है। शायद इसने मेरी आहट सुन ली है।
अब मैं और सहन नहीं कर सकता। आज फैसला हो ही जाना चाहिए।
???
अगले पल डॉक्टर फ्रेंक ने दरवाजा खोला और बाहर निकल गया।


कहां गया है वह तलवार लेकर?
जल्दी ही वह एक कॉरीडोर में जा पहुंचा।
ओह! यहां तो कई दरवाजे हैं।
वह तेजी से एक खुले दरवाजे तक पहुंचा और भीतर झांककर देखा।
उफ। कैसी तेज बदबू है! और साथ ही तेज गर्मी भी!
यह शायद डॉक्टर की बेटी ऐनी है!
ओह!
यह नागकन्या है, मगर जीवित नहीं लगती!
28


अरे! यह तो सिर्फ खाल है!
उफ! यह तो केंचुली है!
अद्भुत! मामला सचमुच रहस्यमय है। मुझे उन सीढ़ियों द्वारा नीचे जाकर देखना होगा!
जल्दी ही वह तहखाने की सीढ़ियां उतर रहा था।
नीचे पहुंचकर जैसे ही उसने बंद दरवाजे को खोला —
उफ! यह भाप कैसी है?
नीचे तहखाने में एक अजीब दृश्य था।
पुड़...पुड़क... पुड़...!
पुड़...पुड़क पुड़!
पुड़...पुड़क पुड़!
ओह!
एक कोने में उसे डॉ. फ्रेंक भी दिखाई दिया—
उठो, ऐनी



आज मैं तुम्हें अपने हाथों से मार डालूंगा। तुम्हारा मर जाना ही ठीक है!
ई...ई...ई...! मुझे ठण्ड लग रही है!
आज के बाद नहीं लगेगी।
ई...ई...ई...!
तभी इंस्पेक्टर संदीप की आखों के सामने एक और अजीब घटना घटी। वहां काले सपेरे ने प्रवेश किया —
धाड़
संदीप सम्मोहित-सा खड़ा देख रहा था।
हा...हा...हा...! तुम उसे नहीं मार सकते डॉक्टर।
आज मैं तुझे भी मार डालूंगा।
तो फिर ले...
टन


टन
आखिर में कालिये सपरे के वार से डॉक्टर फ्रेंक की तलवार उसके हाथ से छूटकर एक ओर जा गिरी।
टन
टन
उफ।
हा...हा... हा..!
ईsss याsss
डॉक्टर तेजी से एक ओर हट गया—
परिणाम स्वरूप कालिया अपनी ही झोंक में कढ़ाव में जा गिरा।
छपाक
आsss
पुड़क पुड़क पुड़क
ई...ई...ई...!
अगले पल—
वह तो खत्म हुआ। अब तेरी बारी है।


तभी ऐनी का शरीर तेजी से नागकन्या में परिवर्तित होने लगा।
फिस्स
अगले पल उसकी जीभ लम्बी होकर डॉक्टर की ओर बढ़ी...
उफ!
सड़ाप
...और उसके कंधे में जा धंसी —
खच्च
आई...ई...ई...!
यह देख इंस्पेक्टर चौंका और उसने फायर कर दिया।
ई...ई...ई...!
धांय
फिस्स
नाग कन्या तेजी से इंस्पेक्टर की ओर बढ़ी —
उसे अपनी ओर बढ़ते देख इंस्पेक्टर ने उस पर एक के बाद एक कई फायर किये।
धांय
धांय
धांय


आ sss
ऐनी मर चुकी थी और डॉक्टर का शरीर नीला पड़ता जा रहा था। वह तेजी से डॉ. फ्रेंक की ओर लपका —
डॉ. फ्रेंक! तुम ठीक हो ना?
न... नहीं... मैं मर रहा हूं। आह!
मुझे बताओ, यह सब क्या चक्कर है डॉक्टर? क्या तुम्हारी बेटी कोई प्रेतात्मा थी?
नहीं। उसके शरीर में एक नागिन की आत्मा का वास था। मैं तुम्हें संक्षेप में बताता हूं। आह।
...एक वर्ष पहले मैं अफ्रीका के जंगलों में गया था। ऐनी भी मेरे साथ थी। वहां एक कबीला आबाद है, जिसके सदस्य जादू जानते हैं और वे सांप की पूजा करते हैं। एक दिन मैंने जंगल में एक नागिन को मार डाला। सांपों के उन पुजारियों को जब यह पता चला तो उन्होंने ऐनी का अपहरण कर लिया और जब चार दिन बाद ऐनी वापस आई तो उसमें नागिन की आत्मा प्रवेश कर चुकी थी। मैं डरकर उसे अफ्रीका से यहां ले आया। मगर जादूगर कबीले का एक सदस्य हमारे पीछे यहां भी चला आया और मुझसे प्रतिशोध लेने के लिए ऐनी को अपने इशारों पर नचाने लगा। खैर, उसे तो मैंने आज मार डाला। और ऐनी को तुमने खत्म कर दिया ...


... वैसे यह अच्छा ही हुआ, क्योंकि ऐनी का जीवन बेकार हो चुका था। वह ठण्ड बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। गर्मी पहुंचाने के लिए हमेशा घर में आग जलाए रखनी होती थी। गंधक की भाप उसके जीवन के लिए जरूरी थी। वह सांप की तरह ही जीवित जानवरों को खाती थी और उस जादूगर के इशारे पर इंसानों का शिकार भी करती थी इसलिए आज मैंने उसे मार डालने का फैसला किया था और...और... आsss
पोथी-शाला
डॉक्टर!
अगले ही क्षण —
उफ!
इंस्पेक्टर संदीप आश्चर्य और दुखी मन से डॉक्टर की लाश को कंकाल बनते देखता रहा।
समाप्त



सूर्यनगर राज्य में फैल गई थी एक अजीब बीमारी।
ओह ! मेरा हाथ गायब हो गया।
उफ ! म...मेरी टांगे !
गायब होने लगे थे लोगों के अंग जो बन गए थे लुटेरे
तोड़ दो राजकोष का द्वार लूट लो सब कुछ !
हा... हा... हा... लूट लो सारा खजाना।
बड़ा ही अद्भुत तरीका था उनका लूट-पाट करने का
■ क्या जटायु रोक पायेगा इस लूट-पाट को?
■ अंगों के लुटेरे बनने का क्या रहस्य था?
■ क्या अंग विहीन लोगों को अपने अंग वापस मिल सके?
इन सब का जवाब है
जटायु का ज्वालामुखी कॉमिक्स ! जटायु के जीवन की सबसे हौलनाक दास्तान।
लुटेरे अंग


मनोज कॉमिक्स
पेश करते हैं।
कॉमिक्स की दुनिया के
असली नायक
जो अब शीघ्र आ रहे हैं
आप के बीच
MANOJ COMICS
महानायक
किड्स
100%
मनोरंजन
जी हां! ये हैं,
महानायक किड्स
यानी
असली नायक!



जैसा कि पहले आपने
हवलदार बहादुर और टिण्डा
पहलवान में पढ़ा था कि हवलदार
बहादुर ने इनाम में भूतनाथ से इच्छाधारी
शक्ति मांग ली थी। इस इच्छाधारी शक्ति से
उन्होंने क्या-क्या गुल खिलाए ?
जानने के लिए पढ़ें हवलदार बहादुर का
सबसे हा... हा... हाकारी कॉमिक्स

इच्छाधारी हवलदार और पंगनाथ